

# खुरपका मुँहपका रोग (एफ. एम. डी.)

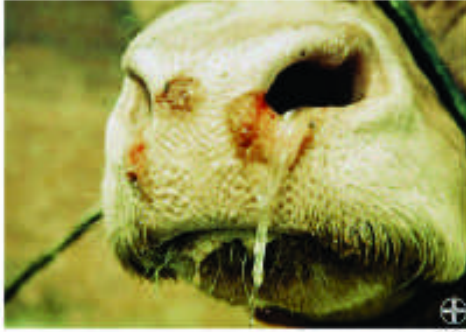
तीव्र गति से फैलने वाला वायरस जनित संक्रामक रोग

## रोग का फैलाव

हवा के माध्यम से, रोगी पशु एवं इसके सम्पर्क में आने वाले पशु/व्यक्ति, संक्रमित चारे, दाना-पानी, दूध एवं बरतनों से रोग फैल सकता है।

## लक्षण

मुँह से लार गिरना



मुँह, मसूड़े व जीभ पर छाले



खुरों के बीच छाले



थान एवं गादी पर छाले



## बचाव व उपचार

चार माह से अधिक की आयु वाले पशुओं में छः माह के अंतराल पर टीकाकरण करायें

- घाव में कीड़े पड़ने पर एक भाग फिनायल तथा चार भाग मीठे तेल को मिलाकर घाव पर लगायें
- बीमार पशु का क्रय विक्रय नहीं करें
- उपचार के लिये पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें

- रोगी पशुओं को प्रभावित क्षेत्र से बाहर न ले जावें
- रोगी पशु को अलग से रखें एवं उसके चारे-पानी की व्यवस्था भी अलग से करें
- खुर व मुँह को लाल दवा या फिटकरी के घोल से सुबह-शाम धोवें



पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग  
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान ( पी.जी.आई.वी.ई.आर. )  
( राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय )  
एन.एच. 11, आगरा रोड, जामडोली, जयपुर-302031

